स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक :
समय-आगम
डॉ० सुनील कुमार
412/3 जागृति बिहार,
गढ़ रोड, मेरठ 250004
सम्पर्क : 9219794232

सर्वाधिकार सुरक्षित

Year VIIIth Vol. I WINTER, FEBUARY, 2014 Half Yearly
Multilangual ISSN-0976-4682

Sr. No. 15

Price : Rs. 500/-

वैधानिक सूचना

समय–आगम अर्द्धवार्षिक शोध पत्र के सभी पद और कार्य पूर्णतः अवैतनिक हैं । किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र मेरठ जनपद होगा। प्रकाशित शोध–पत्र/आलेख एवं सम्बन्धित सामग्री, विषयवस्तु और उद्धृत संदर्भ आदि का समस्त उत्तरदायित्व लेखक का होगा । स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक शोध–पत्र/आलेख के प्रति किसी प्रकार के उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी भी अंक में प्रकाशित सामग्री के पुर्नप्रकाशन के लिये लिखित अनुमति अनिवार्य होगी ।

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक डॉ० सुनील कुमार द्वारा शिवम् ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-1, वैशाली कॉलोनी, मेरठ से मुद्रित कर 412/3 जागृति विहार, मेरठ से प्रकाशित

अनुक्रमणिका

1– मेघदूत में प्रयुक्त मेघ–पर्यायों की अर्थव्यंजकता
डॉ0 अंजना मेहता 6

2– भर्तृहरि शतक 13

3– "मीरा" दरद न जाण्या कोय
डॉ0 सुनील कुमार 16

4– मानव अधिकारों का संघर्ष
(भारतीय नारी के विशेष सन्दर्भ में)
डॉ0 जुगल किशोर दाधीच 24

5– निराला और उनका सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टिकोण
डॉ0 प्रियंका कुमारी 34

6– शोध कार्यों का सामाजिक विकास में महत्व
डॉ0 बबलू सिंह, डॉ0 हरेन्द्र कुमार 38

7– 'गदल' कहानी नारी शक्ति का यथार्थ दस्तावेज
प्रा0 दिनेशभाई किशोरी 46

8– मानवीय संवेदना के रचनाकार हजारी प्रसाद द्विवेदी
डॉ0 बबीता त्यागी 51

निराला और उनका सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण

डॉ0 प्रियंका कुमारी

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हिन्दी के युगान्तरकारी कवि है और छायावादी कवि चतुष्टय में उनका स्थान महत्वपूर्ण है। उनकी कविता में नवजागरण का सन्देश मिलता है, प्रगतिशील चेतना तथा राष्ट्रीयता का स्वर दिखता है मानव मन की पीड़ा, परतन्त्रता के प्रति तीव्र आक्रोश उनकी कविताओं में है तथा अन्याय एवं असमानता के प्रति विद्रोह की भावना उनमें सर्वत्र व्याप्त है।

निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता विद्यमान है जिसे डॉ. रामविलास शर्मा ने ओज और औदात्य कहा है। परिस्थितियों के घात–प्रतिघात ने उन्हें उद्‌बुद्ध सचेत एवं जागरूक कवि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। अन्याय, अत्याचार एवं असमानता के विरूद्ध वे जीवन भर संघर्ष करते रहे। मानव की पीड़ा ने उनके संवेदनशील हृदय को करूणा प्लावित कर दिया था। उच्च वर्ग की विलासिता एवं निम्न वर्ग की स्थिति को देखकर वे अपने हृदय में गहन वेदना, टीस एवं छटपटाहट का अनुभव करते थे। सामाजिक विषमता के विरूद्ध वे आवाज उठाते रहें। उनके काव्य का मूल स्वर क्रान्तिकारी एवं विद्रोही भावनाओं से युक्त है। सामाजिक विषमता के कारण मानव कितना दयनीय बन गया है इसकी अभिव्यक्ति निम्न पंक्तियों में हुई है–

चाट रहे जूठी पत्रल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।।

निराला के क्रांतिकारी दृष्टिकोण की सच्चाई मालूम होती है।

जीर्ण बाहु, है जीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्व भारती लाडनूँ (राजस्थान)

ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार,
हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार !

निराला के काव्य में सामाजिक विषमता के प्रति तीव्र आक्रोश दिखाई देता है। 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताएँ गरीबों के प्रति सहानुभूति से भरी हुई है। वह तोड़ती पत्थर की उस मजदूरनी की दीन दृष्टि में जो पीड़ा है उसकी अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में सहज से देखी जा सकती है–

"देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्न तार
देख कर कोई नहीं
देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं
सजा सहज सितारा,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी झंकार।"

निराला एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जो शोषण मुक्त हो, जहाँ अन्याय एवं अत्याचार के लिए कोई शोषण स्थान ही न हो। वे समता, स्वतन्त्रता, न्याय के समर्थक थे और सामाजिक विषमता को हर स्तर पर समाप्त कर देना चाहते थे। भारतीय समाज ने 'विधवा' की स्थिति कितनी दयनीय है, इसकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी 'विधवा' कविता के माध्यम से इस प्रकार की है–

"वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी
वह दीप शिखा–सी शान्त भाव में लीन
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तरू की छुटी लता–सी हीन
दलित भारत की ही विधवा है।"

निराला ओज और औदात्य के कवि माने गये है। भारत की परतन्त्रता के प्रति वे जनता को जागरूक करना अपना कर्तव्य माना है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। 'जागों फिर एक बार'